International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832, (Print), E-ISSN- 2320-5474, July, 2013 VOL-V * ISSUE -54

शोध पत्र- संगीत

वैदिक काल में संगीत की अवस्था

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

July,2013

* डी. फिल संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय , इलाहाबाद

वैदिक युग का प्रारम्भ आर्यों के आगमन से मानते हैं परन्तु अभी तक यह निर्णय नहीं हो सका कि आर्य कहाँ के निवासी थे। एक विद्वान का कथन है कि 'वह स्थान भारत ही है जहाँ से आर्य लोग सम्पूर्ण विश्व में फैले। वास्तव में आर्य लोग भारत के मूल निवासी थे। इनका संगीत अत्यन्त उत्कृष्ट था।[1]

वेद शब्द 'विद् सत्तायाम्' 'विद्ज्ञाने', विद् विचारणे' और विद्दृ लाभे' इन चार धातुओं से निष्पन्न होता है। इसका तात्पर्य है– जिसकी सदैव सत्ता हो, जो अपूर्व ज्ञानप्रद हो, जो ऐहिक कामुष्मिक दोनों प्रकार का कोष हो और जो लौकिक तथा लोकोत्तर लाभप्रद हो ऐसे ग्रन्थ को वेद कहते हैं।[2]

एकशतममध्वर्युशाखा महस्रवर्त्मा सामवेदः।
एकविंशतिधा वाहवृच्यम नवधाऽयर्वपोवेदः ।। (महाभाष्य)

अर्थात– महाभाष्यादि ग्रन्थों के आधार पर वेद की '1131' शाखायें हैं। यजुर्वेद की '101' सामवेद, की '1000' ऋग्वेद की '21' और अथर्ववेद की '9' शाखायें कही गई हैं।[3]

वेदों का रचनाकाल–ऋग्वेद का रचनाकाल ईसा से लगभग 2000 से 1000 वर्ष पूर्व माना जाता है। वेदों की संख्या चार मानी गई है . ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

ऋग्वेद में संगीत–

ऋग्वेद में संगीत का प्रयोग भगवान की पूजा आराधना के रूप में संगीतमय ढंग से होता था।"ऋग्वेद में वर्णित गीत प्रबन्धों में गाथा एक विशिष्ट तथा परम्परागत गीत प्रकार है। जिसका गायन धार्मिक तथा लौकिक समारोहों पर किया जाता था।[4] प्राचीन परम्परा पर आधारित होने के कारण इन गाथाओं की तुलना ऋचाओं से की जाती थी।[5]

इस काल में संगीत का आध्यात्मिक स्थान रहा है। ऋग्वेद में भिन्न–भिन्न प्रकार के वाद्यों जैसे– "दुन्दुभि, वाण, नाड़ी वेणु, कर्करी, गर्गरी, धीणी, पिंगा, आधाती नामक वाद्यों का उल्लेख भी मिलता है।[6]

यजुर्वेद में संगीत–

"यद्यपि यजुर्वेद में संगीत से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है फिर भी संगीत से सम्बन्धित अनेक उल्लेख यजुर्वेद और तत्सम्बंधी वैदिक साहित्य में प्राप्त हो जाते हैं। जिसमें इस तथ्य का निर्देश मिलता है कि यजुर्वेद काल में संगीत का पर्याप्त प्रचार व प्रसार था। इस वेद में स्थानतर, वैरूप, वैश्वानर, वामदेव, शाक्वर, इवैता, अभिकृत इन सात प्रकार के सामों का उल्लेख किया गया है। इसमें से कई साम किसी ऋतु विशेष में गाये जाते हैं।[7]

"यजुर्वेद संहिता में वीणा, वाण, तूणव, दुन्दुभि, भूमि दुन्दुभि, शंख तथा तलव आदि वाद्यों का उल्लेख है। अश्वमेघ आदि यज्ञों में मनोरंजन के निमित्त गाथा गान तथा वीणादि वाद्यों का वादन किया जाता था। अश्वमेघ यज्ञ के अन्तर्गत सामगान के साथ ही गाथा गान भी प्रचलित रहा है।[8] यदि देवता का आह्वान करना है तो उसे संगीतात्मक स्वर में आमंत्रित करना चाहिए.

बृहदिन्द्राय गाय त मदतोवृत्रहन्तमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ।। य जु. 2 3

यजुर्वेद में महिलाओं का संगीत के प्रति रूझान स्पष्ट दिखाई पड़ता है, निम्न जातियों की महिलाएं लोक नृत्य आदि में भाग लिया करती थी।

सामवेद में संगीत–

सामवेद के द्वारा संगीत का मार्ग और अधिक प्रशस्त हुआ।ऋचाओं को देव स्तुति के लिए संगीत के ही माध्यम से गाया जाता था जिसे सामगान कहते थे। जैमिनि सूत्र के अनुसार साम शब्द की व्याप्ति निम्न शब्दों में स्पष्ट की गई है–

'सामवेदे सहस्त्रंगीत्थुपायाः। आह कतमे गीत्युपाया नाम।
उच्यते गीतिर्नाम क्रिया साभ्यन्तरप्रयत्नजन्यास्वर
विशेषाणामाभिव्यंजिका सामशब्दभिलप्या।
सानियत प्रमाणायामृति गीयते।।[9]

'साम' शब्द का अर्थ वह गीति क्रिया है, जो आभ्यन्तर प्रयत्न से उद्भूत स्वरविशेषों की अभिव्यंजिका है। साम शब्द से अभिहित "धुने" ऋचाओं के आधार से गाई जाने पर साम कहलाती है। सामवेद के दो प्रधान भाग हैं– 1– आर्चिक 2– गान

आर्चिक का अर्थ है ऋचाओं का समूह, वैदिक परम्परा में इन्हें 'योनिग्रन्थ कहते हैं।[10]

आर्चिक के दो प्रकार हैं–

(1) पूर्व आर्चिक– इनमें ऋचाएं सम्मिलित हैं।
(2) उत्तर आर्चिक– इनमें ऋचाओं पर आधारित धुन व गाथाएं सम्मिलित हैं।

गान के स्वरूप निम्न हैं–ग्रामगेयगान, आरण्यक गान, ऊहगान,ऊह्यगान सामवेद के दो भागों में 'गान' दूसरा भाग है इसके ग्रन्थ 'गान ग्रन्थ' कहे जाते हैं। मंत्रो का संग्रह तथा संगीतात्मक रीति से उच्चारण करना 'गान' कहलाता है।

"सायणाचार्य ने साम्य भाष्य की भूमिका में गान को द्योतक बताया है। तथा इनके अनुसार शब्दों का वास्तविक आश्रय स्थान 'साम' ही है।[11]

साम वेद में स्वरों की संख्या तीन मानी जाती है– उदात्त,अनुदात,स्वरित, इन तीनों स्वरों पर ही सात स्वर की

उत्पत्ति मानी जाती है यथा–

'उच्चौ निषाद गान्धारौ नीचा ऋषभ धैवतौ।
शेषास्तु स्वरिता क्षेय षड़ज मध्यम पंचमाः।।[12]

अथार्त–

उदात्त	–	नि, ग
अनुदात्त	–	रे, ध
स्वरित	–	स म प

सामवेद में वाद्यों का महत्व – वाद्यों का महत्व व प्रयोग सामवेद में प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है जैसे– दुंदुभि, भूमिदुदंभि, थेरी मृदंग इत्यादि इसके अलावा धन वाद्यो में– ''ध्यानविद्पनिषद्' में घनवाद्य घंटे के अनुकरणन की तुलना प्रणव के नाद से एवं एवं 'नादविदपनिषद' में नाद के अनेकों प्रकारों में फिंकणी, वीणा, वंशी तथा भ्रमर की ध्वनि का उल्लेख किया है।[13]

अथर्वेद में संगीत–

अथर्वेद में कहा गया है कि गायन से देव प्रसन्न होते हैं तथा आयु ,प्राण ,प्रजा ,पशुधन ,कीर्ति आदि की वृद्धि होती है

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयंतां पावमानी द्विजानाम ।
आयुः प्राणं प्रजा पशुं कीति द्रविणं ब्रह्मवच र्सम ।
मह्मं दत्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम् ।। अथर्व. 19–77–1

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल सांगीतिक दृष्टिकोण से बहुत ही समृद्ध रहा है इस काल में मंत्रोच्चारण , विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग एवं स्त्रियों का सांगीतिक रुझान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जो की वैदिक काल में संगीत की उच्च अवस्था को दर्शाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय संगीत का इतिहास – 13 से 17 पृ0
2. वेद दिग्दर्शन– ले माधवाचार्य शास्त्री व वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति–गिरिधर शर्मा चर्तुवेदी– पृ0 22,पृ0 19 तथा पृ0 70 से
3. वेद दिग्दर्शन– पृ0 119
4. संगीत शती– जया जैन, पृ0 22, 23
5. भारतीय संगीत का इतिहास– पृ0 20
6. संगीत का विकास और विभूतियाँ– श्रीपद् बान्धोपाध्याय पृष्ठ–14
7. संगीत का विकास और विभूतियाँ – श्रीपद बन्धोपाध्याय पृष्ठ–15
8. भारतीय संगीत का इतिहास – डा0 स्वाती शर्मा पृ0 153
9. भारतीय संगीत का इतिहास – पृ0 56
10. वेददिग्दर्शन– पृ0 146
11.भारतीय नाट्यशास्त्र तथा हिन्दी नाट्य विधान पृष्ठ–228
12.भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण– स्वतंत्र शर्मा पृ0 17
13.उपनिषद अंक पृ0 670 व 667 कल्याण